2 समाजवाद, साम्यवाद और रूस की क्रांति

समाजवाद और साम्यवाद

समाजवाद

1789 की फ्रांसीसी क्रांति ने समाज और अर्थव्यवस्था की पुनर्रचना से संबद्ध नई विचारधाराओं को जन्म दिया। सामंती व्यवस्था और चर्च के आधिपत्य को समाप्त कर इसने स्वतंत्रता और समानता की भावना पर बल दिया। फलतः, सामाजिक बदलाव से संबद्ध विभिन्न विचारधाराओं का उदय हुआ। इनमें **उदारवादी** अथवा **रैडिकल, रूढ़िवादी** या **प्रतिक्रियावादी, अतिवादी, समाजवादी** तथा **साम्यवादी** प्रमुख थे। उदारवादी व्यक्तिगत स्वतंत्रता तथा धार्मिक स्वतंत्रता के हिमायती थे। वे निरंकुश वंशानुगत शासन के विरोधी भी थे। अतिवादी विशेषाधिकारों और संपत्ति के केंद्रीकरण के विरोधी थे। प्रतिक्रियावादी पुरातन सामाजिक, आर्थिक और राजनीतिक व्यवस्था को बनाए रखना चाहते थे। वे उदारवादियों और अतिवादियों की नीतियों के विरोधी थे। समाजवादियों और साम्यवादियों की सोच इनसे अलग थी। औद्योगिकीकरण के परिणामस्वरूप हुए सामाजिक-आर्थिक बदलाव के आधार पर वे समाज और अर्थव्यवस्था की पुनर्संरचना करना चाहते थे।

औद्योगिक क्रांति सबसे पहले इंगलैंड में हुई। इससे एक ओर आर्थिक प्रगति हुई तो दूसरी ओर समाज में पूँजीपति और श्रमिक वर्ग का उदय हुआ। पूँजीपतियों ने अपने हाथों में पूँजी और मुनाफा का केंद्रीकरण कर लिया। श्रमिकों की स्थिति दयनीय बनी रही। इस प्रकार, औद्योगिक क्रांति ने दो प्रकार की आर्थिक व्यवस्था और दो सामाजिक वर्गों को उत्पन्न कर दिया। कारखानेदारी प्रथा के विकास से पूँजीपति एवं श्रमिक वर्ग का उदय हुआ। इससे सामाजिक खाई बढ़ी। पूँजीपति वर्ग पूँजी-संचय एवं उद्योगों में निवेश कर संपन्न होता गया और श्रमिक वर्ग की स्थिति गिरती गई। कम मजदूरी, काम के अधिक घंटे, संगठनात्मक कमी से उनका शोषण होने लगा।

कुछ नए चिंतक इस व्यवस्था में परिवर्तन लाना चाहते थे। उनका मानना था कि नागरिक और कानूनी समानता से भी अधिक महत्त्वपूर्ण सामाजिक और आर्थिक समानता है तथा इसके लिए अधिक प्रयास की आवश्यकता है। ये चिंतक **समाजवादी** (Socialists) के नाम से जाने गए। इन लोगों ने ऐसी अर्थव्यवस्था के निर्माण की बात कही जिसमें उत्पादन के साधनों एवं पूँजी पर राज्य का नियंत्रण हो। उनका यह भी मानना था कि उत्पादन निजी लाभ के लिए न होकर समस्त समाज के लिए हो। 'समाजवाद' शब्द का पहला व्यवहार 1827 में हुआ।

आधुनिक काल में समाजवादी विचारधारा ने एक नया सामाजिक चिंतन दिया। इसने पूँजीपतियों द्वारा श्रमिकों के शोषण के विरुद्ध प्रतिरोध करने तथा वर्गविहीन समाज की स्थापना करने का आह्वान किया। आर्थिक क्षेत्र में समाजवाद व्यक्तिगत स्वामित्व के स्थान पर उत्पादन में सामूहिक स्वामित्व का पक्षधर है। समाजवादी ऐसी अर्थव्यवस्था की स्थापना पर बल देते हैं जिसमें उत्पादन के सभी साधनों, कारखानों तथा विपणन पर सरकार का एकाधिकार हो। उनका मानना है कि समाजवादी व्यवस्था में उत्पादन व्यक्तिगत लाभ के लिए न होकर संपूर्ण समाज के लिए हो।

समाजवादी विचारधारा की उत्पत्ति—समाजवादी विचारधारा के स्रोत 18वीं शताब्दी के प्रबोधन आंदोलन के दार्शनिकों के लेखों में ढूँढ़े जा सकते हैं, जैसे—सेंट साइमन, रॉबर्ट ओवेन इत्यादि। आरंभिक समाजवादी आदर्शवादी थे, उनके लिए यह एक सिद्धांत मात्र था। इसलिए, उन्हें **स्वप्नदर्शी समाजवादी** (Utopian Socialists) कहा गया। इनमें फ्रांस के सेंट साइमन तथा चार्ल्स फूरिए का प्रमुख स्थान था।

आरंभिक समाजवादी—समाजवादी आंदोलन और विचारधारा मुख्यतः दो भागों में विभक्त की जा सकती है—(i) आरंभिक समाजवादी अथवा कार्ल मार्क्स के पहले के समाजवादी और (ii) कार्ल मार्क्स के बाद के समाजवादी। आरंभिक समाजवादी 'आदर्शवादी' या 'स्वप्नदर्शी' (Utopian) समाजवादी कहे गए। वे उच्च और अव्यावहारिक आदर्श से प्रभावित होकर 'वर्गसंघर्ष' की नहीं, बल्कि 'वर्गसमन्वय' की बात करते थे। दूसरे प्रकार के समाजवादियों— फ्रेडरिक एंगेल्स, कार्ल मार्क्स और उनके बाद के चिंतक जो 'साम्यवादी' कहलाए—ने 'वर्गसमन्वय' के स्थान पर 'वर्गसंघर्ष' की बात कही। इन लोगों ने समाजवाद की एक नई व्याख्या प्रस्तुत की जिसे **वैज्ञानिक समाजवाद** कहा जाता है।

आदर्शवादी समाजवादी चिंतक—आदर्शवादी समाजवादी चिंतकों में सेंट साइमन, चार्ल्स फूरिए, लुई ब्लाँ तथा रॉबर्ट ओवेन के नाम विशेष रूप से उल्लेखनीय हैं। प्रथम यूटोपियन समाजवादी सेंट साइमन था। उसका मानना था कि राज्य और समाज का पुनर्गठन इस प्रकार होना चाहिए जिससे शोषण की प्रक्रिया समाप्त हो तथा समाज के गरीब तबकों की स्थिति में भी सुधार लाया जा सके। इसके लिए सभी लोगों को समन्वित रूप से काम करना चाहिए। राज्य और

समाज को निर्धन वर्गों के भौतिक और नैतिक उत्थान के लिए कार्य करना चाहिए। उसका यह भी मानना था कि **प्रत्येक को उसकी क्षमता के अनुसार कार्य तथा प्रत्येक को उसके कार्य के अनुसार पारिश्रमिक** मिलना चाहिए। आगे चलकर सेंट साइमन की यह उक्ति समाजवाद का मूलमंत्र बन गई। सेंट साइमन के सिद्धांतों को चार्ल्स फूरिए ने आगे बढ़ाया। फूरिए औद्योगिकीकरण का विरोधी था। उसकी मान्यता थी कि श्रमिकों को बड़े कारखानों में काम करने के बदले छोटे नगरों एवं कस्बों में छोटी औद्योगिक इकाइयों में काम करना चाहिए। इससे पूँजीपति उनका शोषण नहीं कर पाएँगे। किसानों की स्थिति में भी वह सुधार लाना चाहता था। लुई ब्लाँ ने सुधारों की जो योजना प्रस्तुत की वह अधिक व्यावहारिक थी। उसने सुझाव दिया कि आर्थिक सुधारों को प्रभावशाली ढंग से लागू करने के पूर्व राजनीतिक सोच और व्यवस्था में सुधार लाना आवश्यक है। उसने सामाजिक कार्यशालाओं की स्थापना कर पूँजीवाद की बुराइयों को समाप्त करने की बात कही। इंगलैंड में आदर्शवादी समाजवाद का जनक विख्यात उद्योगपति रॉबर्ट ओवेन था।

रॉबर्ट ओवेन—इंगलैंड में समाजवाद का प्रवर्तक रॉबर्ट ओवेन (1771–1858) को माना जाता है। इंगलैंड में औद्योगिक क्रांति के परिणामस्वरूप कारखानेदारी व्यवस्था का उदय और विकास हुआ। इसमें श्रमिकों का शोषण किया गया। इसे रोकने के लिए ओवेन ने एक आदर्श समाज की स्थापना का प्रयास किया। उसने स्कॉटलैंड के न्यू लूनार्क नामक स्थान पर एक आदर्श कारखाना और मजदूरों के आवास की व्यवस्था की। इसमें श्रमिकों को अच्छा भोजन, आवास और उचित मजदूरी देने की व्यवस्था की गई। श्रमिकों की शिक्षा, चिकित्सा की भी व्यवस्था की गई। साथ ही, काम के घंटे घटाए गए और बाल-मजदूरी समाप्त की गई। वृद्धावस्था बीमा योजना भी लागू की गई। ओवेन के इस प्रयास से मुनाफा में वृद्धि हुई। इससे वह संतुष्ट हुआ। उसने माना कि **संतुष्ट श्रमिक ही वास्तविक श्रमिक है।** यद्यपि ओवेन का आदर्शवाद पूरी तरह सफल नहीं हो सका तथापि ब्रिटिश सरकार ने 1819 में फैक्टरी कानून पारित कर श्रमिकों की स्थिति में सुधार लाने का प्रयास किया। ब्रिटेन में **चार्टिस्ट आंदोलन** (1838) भी हुआ। 1833 में फैक्टरी अधिनियम और अन्य कानूनों द्वारा श्रमिकों को सुविधाएँ दी गईं।

चित्र 2.1 रॉबर्ट ओवेन

19वीं शताब्दी में समाजवादी विचारधारा का तेजी से प्रसार हुआ। फ्रांस में लुई ब्लाँ ने सामाजिक कार्यशालाओं की स्थापना कर पूँजीवाद की बुराइयों को समाप्त करने की बात कही। जर्मनी भी समाजवादी विचारधारा से अपने को अलग नहीं रख सका। रूस में भी समाजवाद ने अपनी जड़ें जमा लीं। समाजवादियों ने व्यक्तिगत संपत्ति के स्वामित्व के विरुद्ध समाज द्वारा नियंत्रित संपत्ति की बात की। यद्यपि आरंभिक समाजवादी अपने आदर्शों की पूर्ति में सफल नहीं हो सके, लेकिन इन लोगों ने ही पहली बार पूँजी और श्रम के बीच संबंध निर्धारित करने का प्रयास किया। कार्ल मार्क्स ने आरंभिक समाजवादियों की विफलता को ध्यान में रखकर ही नई समाजवादी व्याख्या प्रस्तुत की।

साम्यवाद

कार्ल मार्क्स—समाजवादी विचारधारा को आगे बढ़ाने में कार्ल मार्क्स (1818–83) की महत्त्वपूर्ण भूमिका है। मार्क्स का जन्म जर्मनी के राइन प्रांत के ट्रियर नगर में एक यहूदी परिवार में हुआ था। उनके पिता का नाम हेनरिक मार्क्स था। वे एक विख्यात वकील थे। कार्ल मार्क्स ने बॉन तथा बर्लिन विश्वविद्यालयों में शिक्षा ग्रहण की। उसने अर्थशास्त्र का गहन अध्ययन किया। मार्क्स पर रूसो, मांटेस्क्यू एवं हीगेल की विचारधारा का गहरा प्रभाव था। 1843 में उसने अपने बचपन की मित्र जेनी से विवाह किया। विवाह के बाद वह पेरिस गया जहाँ 1844 में उसकी भेंट फ्रेडरिक एंगेल्स के साथ हुई। एंगेल्स के विचारों से प्रभावित होकर मार्क्स भी श्रमिकों की स्थिति पर चिंतन करने लगा। मार्क्स और एंगेल्स ने मिलकर 1848 में **कम्युनिस्ट मैनिफेस्टो** (*Communist Manifesto*) अथवा **साम्यवादी घोषणापत्र** प्रकाशित किया। इसे **आधुनिक समाजवाद का जनक** माना जाता है। मार्क्स ने पूँजीवाद की घोर भर्त्सना की और श्रमिकों के हक की बात उठाई। मजदूरों को अपने हक के लिए लड़ने को उसने उत्प्रेरित किया। उसने लिखा, **श्रमिकों को अपनी बेड़ियों के अलावा कुछ भी नहीं खोना है। उन्हें विश्व पर विजय प्राप्त करनी है। दुनिया के श्रमिकों एक हो।** मार्क्स ने अपनी विख्यात पुस्तक **दास कैपिटल** (*Das Kapital*) का प्रकाशन 1867 में किया। इसे **समाजवादियों की बाइबिल** कहा जाता है। यही दो पुस्तकें मार्क्सवादी दर्शन के मूलभूत सिद्धांतों को प्रस्तुत करती हैं। मार्क्सवादी दर्शन **साम्यवाद** (Communism) के नाम से विख्यात हुआ। मार्क्स के क्रांतिकारी विचारों के कारण उसे जर्मनी

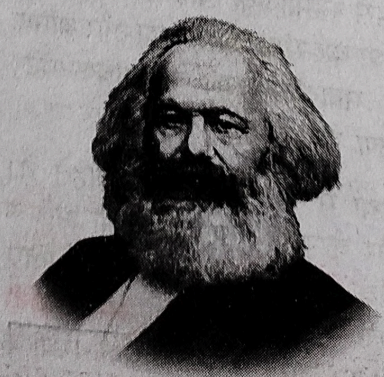

चित्र 2.2 कार्ल मार्क्स एवं

से निष्कासित कर दिया गया। उसने अपना शेष जीवन लंदन में व्यतीत किया।

मार्क्सवादी दर्शन—मार्क्स ने समाजवाद की नई व्याख्या प्रस्तुत की। उसने पहली बार इतिहास की आर्थिक (भौतिक) व्याख्या की। उसका मानना था कि आर्थिक गतिविधियाँ ही मानवजीवन और इतिहास के स्वरूप को निर्धारित करती हैं। मार्क्स का मानना था कि मानव इतिहास **वर्गसंघर्ष** (class struggle) का इतिहास है। इतिहास उत्पादन के साधनों पर नियंत्रण के लिए दो वर्गों में चल रहे निरंतर संघर्ष की कहानी है। वे प्रत्येक ऐतिहासिक घटना के लिए आर्थिक कारणों को उत्तरदायी मानते हैं। उन्होंने आदिम साम्यवादी युग से समाजवादी युग तक के इतिहास को पाँच चरणों में विभक्त किया। ये हैं—(i) आदिम साम्यवादी युग (ii) दासता का युग (iii) सामंती युग (iv) पूँजीवादी युग और (v) समाजवादी युग। मार्क्स के अनुसार, इतिहास का छठा चरण आनेवाला है, जब वर्गविहीन समाज की स्थापना होगी तथा जिसमें वर्गसंघर्ष नहीं होगा। यह साम्यवादी युग होगा। कार्ल मार्क्स द्वारा प्रतिपादित सिद्धांतों में प्रमुख हैं—(i) द्वंद्वात्मक भौतिकवाद का सिद्धांत (ii) वर्गसंघर्ष का सिद्धांत (iii) इतिहास की भौतिकवादी व्याख्या (iv) मूल्य एवं अतिरिक्त मूल्य का सिद्धांत तथा (v) राज्यहीन एवं वर्गविहीन समाज की स्थापना का सिद्धांत। मोटे तौर पर इतिहास के तीन चरण हैं—प्राचीन, मध्य और आधुनिक। प्रथम चरण में स्वतंत्र लोगों और गुलामों के बीच, द्वितीय में सामंतों और किसानों के बीच तथा अंतिम चरण में पूँजीपतियों और श्रमिकों के बीच संघर्ष होता है। औद्योगिक समाज पूँजीवादी समाज है। इसमें पूँजीपति अपनी पूँजी के आधार पर मजदूरों द्वारा अर्जित मुनाफा को हड़प लेता है। श्रमिक की स्थिति दयनीय बनी रहती है। पूँजीवादी व्यवस्था को समाप्त किए बिना श्रमिकों की स्थिति में सुधार नहीं आ सकता है। अतः, मार्क्स ने मजदूरों का आह्वान किया कि वे एकजुट हों, पूँजीवाद और बुर्जुआ वर्ग की सत्ता को समाप्त करें और संपत्ति पर समाज का नियंत्रण स्थापित करें। मार्क्स को विश्वास था कि इस संघर्ष में अंतिम विजय श्रमिकों की होगी, बुर्जुआ वर्ग का स्थान सर्वहारा वर्ग लेगा। ऐतिहासिक प्रक्रिया के पूरा होते ही वर्गविहीन समाज की स्थापना होगी तथा राज्य विलुप्त हो जाएगा। मार्क्स का दर्शन साम्यवादी दर्शन के नाम से विख्यात है।

मार्क्सवाद का प्रसार—मार्क्सवादी विचारधारा का प्रसार तेजी से हुआ। इससे सर्वहारा वर्ग को पूँजीवाद के विरुद्ध संघर्ष करने की प्रेरणा मिली। यूरोप के विभिन्न भागों में समाजवादी विचारधारा से प्रभावित दल स्थापित किए जाने लगे, जैसे—जर्मनी में **सोशल डेमोक्रेटिक पार्टी**, ब्रिटेन में **लेबर पार्टी**, फ्रांस में **सोशलिस्ट पार्टी**, रूस में **रूसी सोशल डेमोक्रेटिक वर्कर्स पार्टी**। अंतरराष्ट्रीय श्रमिक संगठन भी स्थापित किया गया। लंदन में 1864 में मार्क्स के प्रयासों से **प्रथम इंटरनेशनल** (अंतरराष्ट्रीय संघ) की स्थापना हुई। इसमें मार्क्स ने श्रमिकों को संबोधित करते हुए कहा कि अपने प्रयासों द्वारा ही वे अपनी स्थिति में परिवर्तन ला सकते हैं। उन्होंने यह भी कहा कि उनका अंतिम लक्ष्य पूँजीवाद का विनाश होना चाहिए। सम्मेलन में यह नारा भी दिया गया कि **अधिकार के बिना कर्तव्य नहीं और कर्तव्य के बिना अधिकार नहीं**। 1883 में मार्क्स की मृत्यु के बाद पेरिस में **द्वितीय अंतरराष्ट्रीय संघ** की बैठक 1889 में हुई जिसमें विभिन्न देशों के 400 प्रतिनिधियों ने भाग लिया। सम्मेलन में आठ घंटे के कार्य-दिवस की माँग रखी गई। यह निर्णय भी लिया गया कि प्रतिवर्ष 1 मई का दिन मजदूर वर्ग की एकता के प्रतीकस्वरूप **अंतरराष्ट्रीय मजदूर दिवस (मई दिवस)** के रूप में मनाया जाए। 1 मई 1890 को यूरोप और अमेरिका में हड़ताल और प्रदर्शन किए गए तथा अंतरराष्ट्रीय मजदूर दिवस मनाया गया। द्वितीय अंतरराष्ट्रीय संघ की सबसे बड़ी उपलब्धि यह थी कि इसने **सैन्यवाद एवं युद्ध के विरुद्ध आंदोलन तथा सभी राष्ट्रों की बुनियादी समानता तथा राष्ट्रीय स्वतंत्रता के उनके अधिकार** पर बल दिया। समाजवादी आंदोलन के विकास से श्रमिक वर्ग में यह आशा जगी कि शोषण एवं उत्पीड़न से मुक्त समाज का निर्माण होगा। रूस में 1917 की क्रांति के बाद पहली साम्यवादी सरकार की स्थापना हुई।

रूस की क्रांति

रूस में दो क्रांतियाँ हुईं—(i) 1905 में और (ii) 1917 में। 1905 में रूस की जनता ने अत्याचारी जारशाही को समाप्त करने का प्रयास किया, लेकिन यह प्रयास विफल हो गया। **जार** (रूसी सम्राट) का शासन पूर्ववत चलता रहा। 1917 में रूस में पुनः क्रांति हुई। इस बार दो क्रांतियाँ हुईं। पहली क्रांति **पेट्रोग्राद (सेंट पीटर्सबर्ग, लेनिनग्राद)** की क्रांति थी। यह मार्च 1917 में हुई। यह क्रांति **फरवरी क्रांति** के नाम से विख्यात है। इस क्रांति के परिणामस्वरूप मार्च 1917 में जार निकोलस द्वितीय को राजगद्दी छोड़नी पड़ी और रूस पर सदियों से चला आ रहा **रोमोनोव वंश** का शासन समाप्त हो गया। पुराने रूसी कैलेंडर (**जूलियन कैलेंडर**, Julian calendar) के अनुसार, जार ने फरवरी 1917 में गद्दी त्याग दी थी। इसलिए, 1917 की रूस की पहली क्रांति **फरवरी क्रांति** के नाम से जानी जाती है।

1917 में ही रूस में दूसरी बार क्रांति हुई। यह क्रांति **अक्टूबर क्रांति** अथवा **बोल्शेविक क्रांति** के नाम से जानी जाती है। यद्यपि यह क्रांति 7 नवंबर 1917 को हुई थी (**ग्रेगोरियन कैलेंडर**, Gregorian calendar), परंतु पुराने रूसी कैलेंडर के अनुसार वह दिन 25 अक्टूबर 1917 था। इसलिए, **बोल्शेविक क्रांति, अक्टूबर क्रांति** भी कहलाती है। यह क्रांति **मेन्शेविकों** (अल्पमतवाले

रूसी कैलेंडर

पहले रूस में जूलियन कैलेंडर प्रचलित था। बाद में ग्रेगोरियन कैलेंडर लागू किया गया (फरवरी 1918 में)। दोनों कैलेंडरों में भिन्नता पाई जाती है। ग्रेगोरियन कैलेंडर जूलियन कैलेंडर से 13 दिन आगे चलता है।

साम्यवादियों) और **बोल्शेविकों** (बहुमतवाले साम्यवादियों) के बीच सत्ता-संघर्ष के परिणामस्वरूप हुई। राजतंत्र की समाप्ति के बाद सत्ता मेन्शेविक दल के नेता केरेन्सकी के हाथों में आई, परंतु उसकी सरकार अलोकप्रिय थी। सरकार के विरुद्ध असंतोष बढ़ता जा रहा था। ऐसी स्थिति में स्विट्जरलैंड से वापस लौटकर बोल्शेविक दल के नेता लेनिन ने ट्रॉटस्की की सहायता से केरेन्सकी की सरकार का तख्ता पलट दिया। अब सत्ता बोल्शेविक दल के नेता लेनिन के हाथों में आई। इसके साथ ही रूस के नवनिर्माण का कार्य आरंभ हुआ।

1917 की बोल्शेविक क्रांति (अक्टूबर क्रांति) के कारण

रूस की बोल्शेविक क्रांति अनेक कारणों का परिणाम थी। ये कारण वर्षों से संचित हो रहे थे। इस क्रांति के प्रमुख कारण निम्नलिखित थे—

राजनीतिक कारण

निरंकुश एवं अत्याचारी शासन—क्रांति के पूर्व रूस में रोमोनोव वंश का शासन था। इस वंश के शासकों ने स्वेच्छाचारी राजतंत्र की स्थापना की। रूस का सम्राट **जार** अपने-आपको ईश्वर का प्रतिनिधि समझता था। वह सर्वशक्तिशाली था। राज्य की सारी शक्तियाँ उसी के हाथों में केंद्रित थीं। उसकी सत्ता पर किसी प्रकार का नियंत्रण नहीं था। राज्य के अतिरिक्त वह रूसी चर्च का भी प्रधान था। इतना शक्तिशाली होते हुए भी वह प्रजा के सुख-दुःख के प्रति पूर्णतः लापरवाह था। वह दिन-रात चापलूसों और चाटुकारों से घिरा रहता था। अतः, प्रशासनिक अधिकारी मनमानी करते थे। प्रजा जार और उसके अधिकारियों से भयभीत और त्रस्त रहती थी। ऐसी स्थिति में प्रजा की स्थिति बिगड़ती गई और उनमें असंतोष बढ़ता गया।

रूसीकरण की नीति—रूस में विभिन्न प्रजातियों के निवासी थे। इनमें स्लावों की संख्या सबसे अधिक थी। इनके अतिरिक्त फिन, पोल, जर्मन, यहूदी इत्यादि भी थे। सबों की भाषा, रीति-रिवाज अलग-अलग थे। इसलिए, रूसी सरकार ने देश की एकता के लिए रूसीकरण की नीति अपनाई। संपूर्ण देश पर रूसी भाषा, शिक्षा और संस्कृति लागू करने का प्रयास किया गया। जार की नीति थी—**एक जार, एक चर्च और एक रूस।** सरकार की इस नीति से अल्पसंख्यक व्यग्र हो गए। 1863 में पोलों ने रूसीकरण की इस नीति के विरुद्ध विद्रोह कर दिया। यद्यपि यह विद्रोह दबा दिया गया, परंतु इससे अल्पसंख्यकों में अलगाववादी भावना बढ़ती गई।

राजनीतिक दलों का उदय—19वीं शताब्दी के उत्तरार्द्ध से रूस में राजनीतिक दलों का उत्कर्ष हुआ। बौद्धिक जागरण के परिणामस्वरूप जारशाही के विरुद्ध जनता संगठित होने लगी। इनका नेतृत्व प्रबुद्ध विचारकों ने किया। किसानों की समस्याओं को लेकर **नारोदनिक आंदोलन** चलाया गया जिसके प्रमुख नेता हर्जेन, चर्नीशेवस्की और मिखाइल बाकनिन थे। इन लोगों ने कृषक समाजवाद की स्थापना का नारा दिया। कार्ल मार्क्स के एक प्रशंसक और समर्थक प्लेखानोव, जिसे रूस का पहला साम्यवादी माना जाता है, ने 1883 में **रूसी सोशल डेमोक्रेटिक पार्टी** (Russian Social Democratic Party) की स्थापना की। इस दल ने मजदूरों को संघर्ष के लिए संगठित करना आरंभ किया। मजदूर मार्क्स के दर्शन से प्रभावित हुए। प्लेखानोव के अतिरिक्त लेनिन ने भी मार्क्सवाद का प्रचार किया। 1900 में **सोशलिस्ट रिवोल्यूशनरी पार्टी** (Socialist Revolutionary Party) की स्थापना हुई। इसने किसानों की समस्याओं पर ध्यान दिया। लेनिन ने **इस्करा** *(Iskra)* नामक पत्र का संपादन कर क्रांतिकारी आदर्शों का प्रचार किया। 1903 में संगठनात्मक मुद्दों को लेकर सोशल डेमोक्रेटिक पार्टी दो दलों में विभक्त हो गई—**बोल्शेविक** (बहुमतवाले) एवं **मेन्शेविक** (अल्पमतवाले)। मेन्शेविक संवैधानिक रूप से देश में राजनीतिक परिवर्तन चाहते थे तथा मध्यवर्गीय क्रांति के समर्थक थे। परंतु, बोल्शेविक इसे असंभव मानते थे और क्रांति के द्वारा परिवर्तन लाना चाहते थे जिसमें मजदूरों की विशेष भूमिका हो (सर्वहारा क्रांति)। 1912 में बोल्शेविक समाचारपत्र **प्रावदा** *(Pravda)* का प्रकाशन कर दल की नीतियों का प्रचार किया गया। इससे बोल्शेविक दल का प्रभाव अधिक व्यापक हो गया। इसी दल के नेता लेनिन के नेतृत्व में 1917 की रूसी क्रांति हुई।

नागरिक एवं राजनीतिक स्वतंत्रता का अभाव—निरंकुश जारशाही के अंतर्गत रूसी जनता को किसी प्रकार का राजनीतिक अधिकार नहीं था। विचार-अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता नहीं थी। व्यक्तिगत और प्रेस की भी स्वतंत्रता नहीं थी। जनता की कार्यवाहियों पर जासूस कड़ी निगरानी रखते थे। पुलिस किसी भी व्यक्ति को गिरफ्तार कर कारण बताए बिना साइबेरिया के यातना-गृह में भेज सकती थी। सरकार की अनुमति के बिना कोई न तो रूस से बाहर जा सकता था और न ही रूस में प्रवेश कर सकता था। देश में राजनीतिक संस्थाओं का अभाव था। रूस की संसद **ड्यूमा** (Duma) में भी राजतंत्र-समर्थक ही थे। इससे जनता का असंतोष बढ़ा।

रूस की राजनीतिक प्रतिष्ठा में कमी—पीटर महान के शासनकाल में (1682–1725) रूस की शक्ति और प्रतिष्ठा में अत्यधिक वृद्धि हुई, परंतु 19वीं शताब्दी के उत्तरार्द्ध से उसकी शक्ति और प्रतिष्ठा में कमी आ गई। **बाल्कन युद्धों** में उसे सफलता नहीं मिली। 1854–56 के **क्रीमिया युद्ध** में भी रूस की पराजय हुई। 1904–05 के **रूसी-जापानी युद्ध** में पराजय से रूस को गहरा आघात लगा। छोटे-से एशियाई देश से पराजित होने से रूस की महानता का भ्रम टूट गया। उसकी प्रतिष्ठा नष्ट हो गई। जनता में भी असंतोष और विद्रोह की भावना बढ़ी। परिणामस्वरूप, 1905 में रूस में पहली क्रांति हुई।

1905 की क्रांति का प्रभाव—1904 तक बढ़ती महँगाई के कारण श्रमिकों की स्थिति दयनीय हो गई। उनकी वास्तविक मजदूरी में बीस प्रतिशत की गिरावट आई। ऐसी स्थिति में बड़ी संख्या में श्रमिकों ने मजदूरी में बढ़ोतरी, काम के घंटों में कमी करने तथा अपनी स्थिति में सुधार के लिए हड़तालें कीं। सेंट पीटर्सबर्ग की हड़ताल में एक लाख से अधिक श्रमिकों ने भाग लिया। ऐसी ही परिस्थिति में 9 जनवरी 1905 (ग्रेगोरियन कैलेंडर के अनुसार 22 जनवरी) के **खूनी रविवार** (लाल रविवार) के दिन सेना ने निहत्थे मजदूरों और उनके परिवार पर गोली चलाई जिसमें हजारों लोग मारे गए एवं घायल हुए। ये लोग रोटी की माँग करते हुए जुलूस के रूप में सेंट पीटर्सबर्ग स्थित राजमहल की ओर जा रहे थे। इस नरसंहार से रूसी स्तब्ध रह गए। सेना और नौसेना में भी इसकी व्यापक प्रतिक्रिया हुई एवं विद्रोह की स्थिति उत्पन्न हो गई। देशभर में हड़तालें हुईं। छात्रों ने विश्वविद्यालयों का बहिष्कार किया। मध्यम वर्ग के लोगों ने भी नागरिक स्वतंत्रता की कमी को लेकर विरोध प्रकट किया।

विद्रोह पर नियंत्रण करने के लिए जार ने सुधारों का दिखावा किया। **ड्यूमा** (प्रातिनिधिक संस्था) का गठन किया गया। इसका कोई परिणाम नहीं निकला। अतः, एक के बाद एक दो ड्यूमाएँ भंग कर दी गईं। तीसरे में जार ने प्रतिक्रियावादियों को सदस्य बनाया। सरकार ने इस विद्रोह को दबा दिया। जनता को संतुष्ट करने के लिए उसने ड्यूमा (Duma) के पुनर्गठन एवं इसकी सहमति के बिना कोई कानून नहीं बनाने का आश्वासन दिया। रूसी-जापानी युद्ध में लाखों रूसी सैनिक हताहत हुए। कृषि और उद्योग पर भी युद्ध का विनाशकारी प्रभाव पड़ा। बड़े स्तर पर युद्ध में सेना की भरती से कारखानों में काम करनेवाले श्रमिकों की कमी हो गई। सेना को रसद की आपूर्ति करने से रोटी की कमी हो गई। रोटी के लिए जगह-जगह दंगे होने लगे। 1905 की क्रांति ने 1917 की क्रांति की पृष्ठभूमि तैयार कर दी।

प्रथम विश्वयुद्ध में रूस की पराजय—प्रथम विश्वयुद्ध में रूस भी सम्मिलित हुआ। जार का मानना था कि युद्ध के अवसर पर जनता सरकार का समर्थन करेगी तथा देश के अंदर सरकार-विरोधी प्रतिरोध कमजोर पड़ जाएगा। परंतु, जार की यह इच्छा पूरी नहीं हो सकी। विश्वयुद्ध में रूस की लगातार हार होती गई। सैनिकों के पास न तो अस्त्र-शस्त्र थे और न ही पर्याप्त रसद और वस्त्र। अतः, रूसी सेना की हार होती गई। रूसी सेना की कमान स्वयं जार ने सँभाल रखी थी। पराजय से उसकी प्रतिष्ठा को गहरी ठेस लगी। इस स्थिति से रूसी और अधिक क्षुब्ध और क्रुद्ध हो गए। वे पूरी तरह जारशाही को समाप्त करने के लिए कटिबद्ध हो गए। वस्तुतः, प्रथम विश्वयुद्ध में पराजय 1917 की रूसी क्रांति का तात्कालिक कारण बना।

जार निकोलस द्वितीय और जारीना की भूमिका—क्रांति के समय रूस का सम्राट जार निकोलस द्वितीय था। वह एक कमजोर शासक था। वह स्वतंत्र निर्णय लेने में सक्षम नहीं था। वह पूरी तरह अपनी पत्नी जारीना और उसके समर्थकों के हाथों की कठपुतली था। जारीना भी एक बदनाम और रहस्यमय पादरी रासपुटिन के प्रभाव में थी। रासपुटिन ने जारीना को पूरी तरह अपने वश में कर रखा था। जारीना के माध्यम से उसने प्रशासन एवं जार पर भी अपना प्रभाव जमा रखा था। इससे जनता में आक्रोश व्याप्त था।

सामाजिक कारण

किसानों की स्थिति—1861 तक रूस में अधिकांश किसान बँधुआ मजदूर थे। वे सामंतों के अधीन थे और जमीन से बँधे हुए थे। क्रीमिया युद्ध में पराजय के उपरांत जार एलेक्जेंडर द्वितीय ने 1861 में किसानों को राहत देने के लिए **कृषिदासता** (serfdom) की प्रथा समाप्त कर दी। इससे किसानों को कुछ राहत तो मिली, परंतु उनकी स्थिति में कोई विशेष सुधार नहीं हुआ। किसानों को जमीन तो मिली, लेकिन उसके लिए भारी कीमत चुकानी पड़ी। इससे उनपर कर्ज का बोझ बढ़ गया। कृषि को विकसित करने का कोई प्रयास नहीं हुआ। किसानों के पास छोटे-छोटे भूखंड थे जिनपर वे परंपरागत ढंग से खेती करते थे। उनके पास धन नहीं था कि वे कृषि का विकास कर उपज बढ़ा सकें। दूसरी ओर, उनपर करों का बोझ भी डाल दिया गया। इससे उनकी स्थिति दयनीय होती चली गई। कर चुकाने के लिए उन्हें अपनी जमीन गिरवी रखनी पड़ी अथवा बेचनी पड़ी। अतः, वे पुनः खेतिहर मजदूर मात्र बनकर रह गए।

किसानों का विद्रोह—रूसी समाज में अधिक संख्या में होने के बावजूद किसानों की स्थिति सबसे अधिक खराब थी। अपनी स्थिति

1917 की बोल्शेविक क्रांति (अक्टूबर क्रांति) के कारण

राजनीतिक कारण
- निरंकुश एवं अत्याचारी शासन
- रूसीकरण की नीति
- राजनीतिक दलों का उदय
- नागरिक एवं राजनीतिक स्वतंत्रता का अभाव
- रूस की राजनीतिक प्रतिष्ठा में कमी
- 1905 की क्रांति का प्रभाव
- प्रथम विश्वयुद्ध में रूस की पराजय
- जार निकोलस द्वितीय और जारीना की भूमिका

सामाजिक कारण
- किसानों की स्थिति
- किसानों का विद्रोह
- मजदूरों की स्थिति
- सुधार आंदोलन

आर्थिक कारण
- दुर्बल आर्थिक स्थिति
- औद्योगिकीकरण की समस्या

धार्मिक कारण
- धार्मिक स्वतंत्रता की कमी

बौद्धिक कारण
- रूस में बौद्धिक जागरण

से मजबूर होकर किसानों ने बार-बार विद्रोह किए। एक अनुमान के अनुसार, 1858–60 के मध्य रूसी किसानों ने 284 बार विद्रोह किए। बाध्य होकर जार ने 1861 में कृषिदासता को समाप्त कर दिया, परंतु इससे किसानों की स्थिति में कोई विशेष सुधार नहीं हुआ। अतः, उनके विद्रोह होते रहे। 1905 के बाद किसान-विद्रोहों की संख्या बढ़ती ही गई। किसानों का समर्थन प्राप्त करने के लिए रूसी प्रधानमंत्री पीटर स्टोलीपीन (1906–11) ने किसानों को जमीन खरीदने को उत्प्रेरित किया। इससे किसानों का संपन्न **कुलक वर्ग** उभरा। पीटर का मानना था कि सरकार कुलकों पर क्रांतिकारियों के विरुद्ध भरोसा कर सकती थी, परंतु साधारण किसान वर्ग की स्थिति दयनीय बनी रही। अतः, किसान 1917 की क्रांति के मजबूत स्तंभ बन गए। लेनिन ने भी अपनी **अप्रैल थीसिस** (*April Thesis*) में जमीन अथवा किसानों को पहला स्थान दिया।

मजदूरों की स्थिति—यद्यपि रूस औद्योगिक दृष्टि से यूरोप का एक पिछड़ा राष्ट्र था, परंतु 19वीं शताब्दी के उत्तरार्द्ध से रूस में भी उद्योगों का विकास हुआ। इससे मजदूरों की संख्या बढ़ी, परंतु किसानों के समान उनकी स्थिति भी दयनीय थी। उनपर अनेक प्रतिबंध लगे हुए थे। सरकार उन्हें संगठित होने देना नहीं चाहती थी। इसलिए, श्रमिक संघों के निर्माण पर रोक लगा दी गई थी। मजदूरों को आवश्यकता से अधिक घंटों तक काम करना पड़ता था, उन्हें मजदूरी कम दी जाती थी तथा कारखानों में असहनीय स्थिति में काम करना पड़ता था। इसके विरोध में मजदूरों ने संघर्ष आरंभ किया और हड़ताल की। बाध्य होकर सरकार ने **कारखाना अधिनियम** बनाकर मजदूरों को कुछ सुविधाएँ देने का प्रयास किया, परंतु इससे स्थिति में विशेष परिवर्तन नहीं हुआ। क्षुब्ध मजदूरों ने 1905 में देशव्यापी हड़ताल की जिसमें लाखों मजदूरों ने भाग लिया। 1905–17 के बीच भी मजदूरों की अनेक हड़तालें हुईं। किसानों के समान मजदूर भी जारशाही के प्रबल विरोधी बन गए।

सुधार आंदोलन—रूसी नागरिकों का एक वर्ग ऐसा था जो चाहता था कि रूस में सुधार आंदोलन जार के द्वारा किए जाएँ। जार एलेक्जेंडर द्वितीय ने कई सुधार कार्यक्रम चलाए भी, परंतु इससे सुधारवादी संतुष्ट नहीं हुए। इनमें से कुछ ने **निहिलिस्ट आंदोलन** (Nihilist Movement) आरंभ किया। **निहिलिस्ट** (Nihilist) स्थापित व्यवस्था को आतंक का सहारा लेकर समाप्त करना चाहते थे। 1881 में जार एलेक्जेंडर द्वितीय की हत्या निहिलिस्टों ने कर दी। इन निहिलिस्टों के विचारों से प्रभावित होकर क्रांतिकारी जारशाही के विरुद्ध एकजुट होने लगे।

आर्थिक कारण

दुर्बल आर्थिक स्थिति—क्रांति के समय रूस की आर्थिक स्थिति दयनीय थी। राज्य की आय का मुख्य स्रोत भूमि-कर था, परंतु कृषि का विकास नहीं होने तथा सामंती व्यवस्था के कारण पूरा राजस्व नहीं मिल पाता था। उद्योग-धंधों और व्यापार से भी पूरी आमदनी नहीं होती थी। दूसरी ओर, राजस्व-व्यवस्था भी अव्यवस्थित थी। अनेक युद्धों, विशेषकर रूसी-जापानी युद्ध और प्रथम विश्वयुद्ध में भाग लेने से रूस दिवालियापन के कगार पर पहुँच गया। इससे सामान्यजन, विशेषतः किसानों और मजदूरों की स्थिति दयनीय बन गई।

औद्योगिकीकरण की समस्या—यद्यपि 19वीं शताब्दी से रूस का औद्योगिकीकरण आरंभ हुआ तथापि सरकार के पास स्पष्ट औद्योगिक नीति का अभाव था। उद्योगों का स्वामित्व जार अथवा कुलीन वर्ग के पास था। कल-कारखाने सुनियोजित रूप से नहीं लगाए गए। अधिकांश उद्योग सेंट पीटर्सबर्ग और मास्को के इर्द-गिर्द लगाए गए। रूस के औद्योगिक पिछड़ेपन का एक प्रमुख कारण था राष्ट्रीय पूँजी एवं पूँजीपति वर्ग का अभाव। इससे रूस में विदेशी पूँजी का निवेश बढ़ा। विदेशी पूँजीपति अपने लाभ के लिए मजदूरों का शोषण कर अधिक-से-अधिक मुनाफा कमाते थे। इससे मजदूरों का असंतोष बढ़ता गया।

धार्मिक कारण

धार्मिक स्वतंत्रता की कमी—नागरिक और राजनीतिक स्वतंत्रता के ही समान रूसियों को धार्मिक स्वतंत्रता भी नहीं थी। यद्यपि रूस में विभिन्न धार्मिक संप्रदायवाले—कैथोलिक, प्रोटेस्टेंट, मुस्लिम, बौद्ध—निवास करते थे, परंतु वहाँ पर रूसी कट्टरपंथी ईसाई धर्म एवं चर्च का वर्चस्व था। जार धार्मिक मामलों का भी प्रधान था। लोगों को अपनी इच्छानुसार पूजा-अर्चना करने और अपने धार्मिक विचारों को अभिव्यक्त करने की अनुमति नहीं थी।

बौद्धिक कारण

रूस में बौद्धिक जागरण—19वीं शताब्दी के उत्तरार्द्ध में रूस में बौद्धिक जागरण हुआ जिसने लोगों को निरंकुश राजतंत्र के विरुद्ध बगावत करने की प्रेरणा दी। अनेक विख्यात लेखकों एवं बुद्धिजीवियों—**लियो टॉल्सटाय, ईवान तुर्गनेव, फ्योदोर दोस्तोवस्की, मैक्सिम गोर्की, पावलोविच एंटन चेखव**—ने अपनी रचनाओं द्वारा सामाजिक अन्याय एवं भ्रष्ट राजनीतिक व्यवस्था का विरोध कर एक नए प्रगतिशील समाज के निर्माण का आह्वान किया। टॉल्सटाय ने सामंतवाद और किसानों के शोषण की कटु आलोचना की। उसकी विख्यात पुस्तक **युद्ध और शांति** (*War and Peace*) है। ईवान तुर्गनेव ने अपने उपन्यास **फादर्स एंड सन्स** (*Fathers and Sons*) में युवाओं को इस बात के लिए उत्प्रेरित किया कि वे अत्याचारों का डटकर मुकाबला करें। उसके एक अन्य उपन्यास **दि वर्जीन स्वायल** (*The Virgin Soil*) से प्रेरित होकर युवाओं ने **निहिलिस्ट आंदोलन** चलाया। दोस्तोवस्की ने अनेक प्रेरक उपन्यास लिखे जिनमें सर्वविख्यात है **क्राइम एंड पनिशमेंट** (*Crime and Punishment*)। मैक्सिम गोर्की के उपन्यास **माँ** (*The Mother*) में रूस की दयनीय स्थिति का अवलोकन किया जा सकता है। जनता इनके विचारों से अत्यधिक प्रभावित हुई। चेखव ने अनेक कहानियाँ एवं नाटक लिखे जिनमें तत्कालीन सामाजिक जीवन का वर्णन किया गया। उनके नाटकों में विख्यात हैं **दि थ्री सिस्टर्स** (*The*

चित्र 2.3 मैक्सिम गोर्की

Three Sisters) तथा **दि चेरी ऑचर्ड** (*The Cherry Orchard*)। रूसी लोग, विशेषतः किसान और मजदूर, कार्ल मार्क्स के दर्शन से भी गहरे रूप से प्रभावित हुए। अपनी रचनाओं—**कम्युनिस्ट मैनिफेस्टो** (*Communist Manifesto*) और **दास कैपिटल** (*Das Kapital*)—द्वारा मार्क्स ने समाजवादी विचारधारा और वर्गसंघर्ष के सिद्धांत का प्रतिपादन किया। उसने नारा दिया—**विश्व के मजदूरों, एक हो जाओ, तुम्हारे पास खोने के लिए अभावों और कष्टों के अलावा और कुछ नहीं है।** मार्क्स के विचारों से श्रमिक वर्ग सबसे अधिक प्रभावित हुआ। वे शोषण और अत्याचार के विरुद्ध संघर्ष करने को तत्पर हो गए।

1917 की फरवरी क्रांति

तत्कालीन परिस्थिति से क्षुब्ध होकर मार्च 1917 (ग्रेगोरियन कैलेंडर के अनुसार तथा जूलियन कैलेंडर के अनुसार फरवरी 1917) में मजदूरों ने पेट्रोग्राद (लेनिनग्राद) में एक विशाल जुलूस निकाला। वे

चित्र 2.4 जार निकोलस द्वितीय

रोटी देने, युद्ध बंद करने, निरंकुश शासन समाप्त करने की माँग कर रहे थे। जार ने सैनिकों को जुलूस पर गोली चलाने का आदेश दिया, परंतु सेना ने ऐसा करने से इनकार कर दिया। बाध्य होकर सरकार ने सैनिकों के हथियार ले लिए। इससे सेना भी विद्रोह पर उतारू हो गई। जार की सबसे विश्वस्त सेना की टुकड़ी प्रैओब्राशेंसकी रेजिमेंट ने भी विद्रोह कर दिया। मजदूरों ने भी आम हड़ताल रखी। जार ने तीसरी ड्यूमा को भी भंग कर दिया। परिस्थिति अनियंत्रित हो गई। फलतः, उदारवादी राजकुमार जॉर्ज ल्यूवोव के नेतृत्व में एक बुर्जुआ सरकार का गठन विद्रोहियों ने किया। इस सरकार ने जार को गद्दी त्यागने को विवश कर दिया। बाध्य होकर जार निकोलस द्वितीय ने गद्दी छोड़ दी। उसे और उसके परिवार को गिरफ्तार कर लिया गया। इसके साथ ही रूस में रोमोनोव वंश का निरंकुश शासन समाप्त हो गया। जुलाई 1918 में जार, जारीना और उसके परिजनों को गोली मार दी गई।

केरेन्सकी की सरकार का पतन एवं बोल्शेविक क्रांति—जॉर्ज ल्यूवोव की सरकार में बुर्जुआ वर्ग का प्रभाव था। यह जनता की आकांक्षाओं को पूरा नहीं कर सकी। अतः, लोगों का असंतोष बढ़ता गया। इसलिए, केरेन्सकी के अधीन एक नई सरकार का गठन किया गया। इस सरकार में मेन्शेविकों अथवा उदार समाजवादियों का प्रभाव था, परंतु इस सरकार ने भी जनता की समस्याओं के निराकरण का प्रयास नहीं किया। इस सरकार ने जनतांत्रिक एवं वैधानिक सरकार की स्थापना के अतिरिक्त कुछ नहीं किया। इसने युद्ध जारी रखा। भूमि एवं व्यक्तिगत संपत्ति की सुरक्षा के कुछ उपाय किए गए, परंतु जनता इससे संतुष्ट नहीं हुई। उसका असंतोष बढ़ता गया।

इन्हीं परिस्थितियों में लेनिन स्विट्जरलैंड से वापस रूस पहुँचा। रूस की स्थिति देखकर वह क्षुब्ध हो गया। उसने कहा कि रूसी क्रांति पूरी नहीं हुई है। वांछित परिवर्तन के लिए एक अन्य क्रांति आवश्यक है। अतः, लेनिन इसकी तैयारी में लग गया। रूस पहुँचकर उसने बोल्शेविक दल का नेतृत्व ग्रहण किया। **अप्रैल थीसिस** (*April Thesis*) में उसने बोल्शेविक दल के उद्देश्य और कार्यक्रम निर्दिष्ट किए। ये थे—**भूमि, शांति** और **रोटी** की व्यवस्था करना। उसने अपने सहयोगी ट्रॉटस्की की सहायता से मजदूरों को एकजुट करना आरंभ किया। लेनिन और ट्रॉटस्की दोनों ही केरेन्सकी की सरकार को बलपूर्वक हटाना चाहते थे। अतः, 7 नवंबर 1917 (जूलियन कैलेंडर के अनुसार 25 अक्टूबर 1917) को बोल्शेविकों ने सरकारी भवनों पर सेना और जनता की सहायता से अधिकार कर लिया। केरेन्सकी रूस छोड़कर भाग गया। इस तरह, एक महान क्रांति हुई। सत्ता की बागडोर अब बोल्शेविकों के हाथों में आई। लेनिन के नेतृत्व में एक नई सरकार का गठन किया गया जिसने रूस के नवनिर्माण के लिए कार्य

चित्र 2.5 लेनिन

आरंभ किया। **अक्टूबर क्रांति** अथवा **बोल्शेविक क्रांति** के साथ ही रूसी इतिहास का नया अध्याय आरंभ हुआ।

लेनिन और रूस का नवनिर्माण

लेनिन का जीवनवृत्त—बोल्शेविक क्रांति का प्रणेता लेनिन था। उसका पूरा नाम व्लादिमीर इलिच उलियानोव था, परंतु आमतौर पर वह **व्लादिमीर इवानोविच लेनिन** (V I Lenin) के नाम से विख्यात है। उसका जन्म 22 अप्रैल 1870 को वोल्गा नदी के किनारे स्थित सिमब्रस्क नामक गाँव में हुआ था। वह आरंभ से ही विद्रोही प्रवृत्ति का था। उसके बड़े भाई को जार एलेक्जेंडर की हत्या के आरोप में गोली मार दी गई थी। इसलिए, लेनिन जारशाही का कट्टर दुश्मन बन गया। विद्यार्थी जीवन में ही वह मार्क्सवाद से प्रभावित होकर इसका समर्थक बन गया। उसने स्वयं भी मार्क्सवादी विचारधारा का प्रचार किया। वह रूस की तत्कालीन स्थिति से क्षुब्ध था और प्रचलित व्यवस्था की समाप्ति चाहता था। इसलिए, उसने **सोशल डेमोक्रेटिक पार्टी** की सदस्यता ग्रहण कर ली। बाद में वह बोल्शेविक दल का नेता बन गया। 1905 की रूसी क्रांति में उसने सक्रियता से भाग लिया, परंतु क्रांति के विफल हो जाने के पश्चात वह स्विट्जरलैंड में निर्वासित जीवन व्यतीत करता रहा। 1917 की फरवरी क्रांति के बाद वह रूस वापस पहुँचा। उसने बोल्शेविक दल का नेतृत्व ग्रहण किया। ट्रॉटस्की के सहयोग से उसने केरेन्सकी की सरकार का तख्ता पलट दिया। लेनिन नई बोल्शेविक सरकार का अध्यक्ष बन गया। ट्रॉटस्की को युद्ध मंत्री बनाया गया। शासन सँभालते ही लेनिन ने अपने उद्देश्य और कार्यक्रम निश्चित किए। उसका उद्देश्य रूस का नवनिर्माण करना था। 21 जनवरी 1924 को अपनी मृत्यु तक वह इसी प्रयास में लगा रहा।

लेनिन के कार्य

लेनिन को विकट परिस्थिति में सत्ता सँभालनी पड़ी थी। उसके समक्ष अनेक समस्याएँ थीं जिनका निराकरण करना उसकी प्राथमिकता थी। प्रथम विश्वयुद्ध का प्रतिकूल प्रभाव देश पर पड़ रहा था। क्रांति और युद्ध के दौरान प्रशासनिक, आर्थिक एवं सामाजिक स्थिति बिगड़ चुकी थी। लेनिन ने सत्ता सँभालते ही इन समस्याओं पर ध्यान दिया।

लेनिन के कार्य:-

आंतरिक व्यवस्था
- युद्ध की समाप्ति
- प्रतिक्रांति का दमन
- आर्थिक व्यवस्था
- सामाजिक सुधार
- प्रशासनिक सुधार
- नए संविधान का निर्माण
- नई आर्थिक नीति

विदेश नीति
- गुप्त संधियों की समाप्ति
- राष्ट्रीयता का सिद्धांत
- साम्राज्यवाद-विरोधी नीति
- कौमिन्टर्न की स्थापना

आंतरिक व्यवस्था

युद्ध की समाप्ति—सर्वप्रथम लेनिन ने जर्मनी के साथ युद्ध बंद कर दिया। 1918 में उसने जर्मनी के साथ **ब्रेस्ट लिटोव्स्क की संधि** कर ली। यद्यपि यह संधि सोवियत संघ के लिए अपमानजनक थी, उसे अपना एक बड़ा भूभाग खोना पड़ा, तथापि देश में शांति-व्यवस्था बनाने, अर्थव्यवस्था पर नियंत्रण करने एवं सेना को राहत देने के लिए यह आवश्यक था।

प्रतिक्रांति का दमन—(i) बोल्शेविक सरकार की नीतियों से वैसे लोग व्यग्र हो गए जिनकी संपत्ति और अधिकारों को नई सरकार ने छीन लिया था। अतः, सामंत, पादरी, पूँजीपति, नौकरशाह सरकार के विरोधी बन गए। वे सरकार का तख्ता पलटने का प्रयास कर रहे थे। उन्हें विदेशी सहायता भी प्राप्त थी। अगस्त 1918 में लेनिन की हत्या का प्रयास किया गया। अतः, लेनिन ने प्रतिक्रांतिकारियों का कठोरतापूर्वक दमन करने का निश्चय किया। इसके लिए **चेका** (Cheka) नामक विशेष पुलिस दस्ता का गठन किया गया। इसने निर्ममतापूर्वक हजारों षड्यंत्रकारियों को मौत के घाट उतार दिया। इससे क्रांति-विरोधी पस्त हो गए। चेका के **लाल आतंक** (Red Terror) ने षड्यंत्रकारियों की कमर तोड़ दी।

(ii) सोवियत संघ की आंतरिक अव्यवस्था एवं षड्यंत्रकारी गतिविधियों को देखकर तथा समाजवाद के बढ़ते प्रभाव से चिंतित होकर ब्रिटेन, फ्रांस, जापान और अमेरिका ने प्रतिक्रांतिकारियों की सहायता के लिए रूस में अपने सैनिक भेज दिए। इससे गृहयुद्ध की स्थिति उत्पन्न हो गई। लेनिन ने इसका मुकाबला किया। ट्रॉटस्की ने **लाल सेना** (Red Army) का गठन कर विदेशी सेना को सोवियत संघ से बाहर खदेड़ दिया। इस प्रकार, लेनिन ने प्रतिक्रांतिकारियों एवं पूँजीवादी देशों के आक्रमण से साम्यवादी सरकार की सुरक्षा की।

आर्थिक व्यवस्था—बोल्शेविक सरकार ने नई आर्थिक व्यवस्था स्थापित की। लेनिन ने साम्यवाद को लागू किया। राष्ट्र की सारी संपत्ति तथा उत्पादन और वितरण के साधनों पर सरकारी आधिपत्य स्थापित किया गया। जमीन पर से व्यक्तिगत स्वामित्व हटा दिया गया। जमीन किसानों में बाँट दी गई। कल-कारखानों, रेलवे, बैंक, खान, जंगल का राष्ट्रीयकरण किया गया। कारखानों के तकनीशियनों तथा श्रमिकों के माध्यम से उत्पादन पर नियंत्रण

स्थापित किया गया। हड़तालों पर रोक लगा दी गई। किसानों को भी उत्पादन बढ़ाने को कहा गया। उनसे अनाज की वसूली जबरदस्ती की गई। जार द्वारा विदेशियों से लिए गए कर्ज को चुकाने से सरकार ने इनकार कर दिया। चर्च की संपत्ति का भी सरकार ने अधिग्रहण कर लिया।

लेनिन की आर्थिक व्यवस्था का देश की अर्थव्यवस्था पर अपेक्षित प्रभाव नहीं पड़ा। भूमि एवं उद्योगों के राष्ट्रीयकरण से उत्पादन पर बुरा प्रभाव पड़ा। कृषि और औद्योगिक उत्पादन घट गया। सरकार का विरोध भी होने लगा। किसान जबरदस्ती अनाज-वसूली के विरोध में अपने अनाज जलाने लगे। इससे अनाज की कमी हो गई तथा भुखमरी की स्थिति उत्पन्न हो गई। लेनिन की नीति की आलोचना होने लगी। बाध्य होकर लेनिन को नई आर्थिक नीति अपनानी पड़ी।

सामाजिक सुधार—(i) रूस के नवनिर्माण के लिए सामाजिक सुधार भी किए गए। नारियों को पुरुषों के समान अधिकार दिए गए। उन्हें सरकारी नौकरी करने का अधिकार दिया गया। (ii) शिक्षा पर चर्च का वर्चस्व समाप्त कर दिया गया। सरकार ने निःशुल्क प्रारंभिक शिक्षा की व्यवस्था की। सभी गैर-सरकारी स्कूल बंद कर दिए गए एवं साम्यवादी शिक्षा का प्रचार किया गया। (iii) सभी लोगों को धार्मिक स्वतंत्रता प्रदान की गई। राज्य ने धर्मनिरपेक्षता की नीति अपनाई। (iv) सोवियत संघ में एकदलीय व्यवस्था स्थापित हुई। बोल्शेविक दल का नियंत्रण सभी गतिविधियों पर स्थापित किया गया।

प्रशासनिक सुधार—लेनिन ने आवश्यक प्रशासनिक सुधार भी किए। पुराने नौकरशाहों को बर्खास्त कर दिया गया। राज्य के बड़े पद सिर्फ साम्यवादी दल के सदस्यों को ही दिए गए। इन लोगों ने निष्ठापूर्वक सरकारी नीतियों को कार्यान्वित किया। इसी प्रकार, सेना में भी सुधार हुआ। सेना में बोल्शेविक-समर्थकों की ही भरती की गई। सेना का आधुनिकीकरण भी किया गया।

नए संविधान का निर्माण—लेनिन के नेतृत्व में 1918 में बोल्शेविक सरकार ने एक नए संविधान का निर्माण किया। इसके अनुसार, रूस को **रूसी सोशलिस्ट फेडरल सोवियत रिपब्लिक** (Russian Socialist Federal Soviet Republic) घोषित किया गया। बाद में रूस **सोवियत संघ** अथवा **यूनियन ऑफ सोवियत सोशलिस्ट रिपब्लिक्स** (USSR) के रूप में विख्यात हुआ। सोवियत संघ में **सर्वहारा वर्ग का अधिनायकवाद** स्थापित हुआ। मास्को सोवियत संघ की नई राजधानी बना। पुराने रूसी झंडा के स्थान पर नया झंडा अपनाया गया। झंडा लाल रंग का था जिसपर हँसुआ और हथौड़ा का चित्र बना हुआ था। बोल्शेविक दल का नाम साम्यवादी दल किया गया। इस प्रकार, विश्व में पहली बार समाजवादी शासन की स्थापना सोवियत संघ में की गई।

नए संविधान में प्रतिनिधि सरकार की स्थापना की गई, परंतु केंद्र को सर्वशक्तिशाली बनाया गया। 18 वर्ष से अधिक उम्र के सभी स्त्री-पुरुष नागरिकों को मताधिकार प्रदान किया गया। नागरिक उन्हें ही माना गया जो उत्पादक श्रम द्वारा अपनी जीविका चलाते थे। इस प्रकार, काम करने के अधिकार को संवैधानिक आधार दिया गया। सैनिकों एवं नाविकों को भी नागरिकता दी गई, परंतु जमींदारों, पादरियों और पूँजीपतियों को नागरिकता से वंचित कर दिया गया। नागरिक बोल्शेविक पार्टी द्वारा मनोनीत सदस्यों के पक्ष में ही मतदान कर सकते थे। स्थानीय स्तर पर सभी जगह **सोवियत** का गठन किया गया। ये सोवियतें अपना प्रतिनिधि निर्वाचित कर **राष्ट्रीय सोवियत** की काँग्रेस में भेजती थीं जो विधायिका की सर्वोच्च संस्था थी। सोवियतों की राष्ट्रीय काँग्रेस को ही केंद्रीय कार्यपालिका के गठन का अधिकार दिया गया। कार्यपालिका के सदस्य **पीपुल्स कमीशार** का चुनाव करते थे तथा देश का शासन चलाते थे। लेनिन को पीपुल्स कमीशार (मंत्रिमंडल) का प्रधान बनाया गया। इस प्रकार, नए संविधान में सत्ता निर्वाचित प्रतिनिधियों के हाथों में सौंप दी गई तथा राजतंत्रात्मक व्यवस्था समाप्त कर दी गई।

नई आर्थिक नीति
(New Economic Policy, NEP)

लेनिन ने 1921 में एक **नई आर्थिक नीति** (New Economic Policy, NEP) लागू की। इसके अनुसार, सीमित रूप से किसानों और पूँजीपतियों को व्यक्तिगत संपत्ति रखने की अनुमति दी गई। यह नीति कारगर हुई। खेती की पैदावार बढ़ी तथा उद्योग-धंधों में भी उत्पादन बढ़ा। इससे सोवियत संघ समृद्धि के मार्ग पर आगे बढ़ा। नई आर्थिक नीति की मुख्य विशेषताएँ निम्नलिखित थीं—

(i) किसानों से अनाज की जबरन उगाही बंद कर दी गई। अनाज के बदले उन्हें निश्चित कर देने को कहा गया। शेष अनाज का उपयोग किसान अपनी इच्छानुसार कर सकते थे।

(ii) सैद्धांतिक रूप से जमीन पर राज्य का अधिकार मानते हुए भी व्यावहारिक रूप से किसानों को जमीन का स्वामित्व दिया गया।

(iii) जिन उद्योगों में कामगारों की संख्या बीस से अधिक नहीं थी वैसे उद्योगों को व्यक्तिगत स्वामित्व में चलाने का अधिकार दिया गया।

(iv) उद्योगों का विकेंद्रीकरण कर उन्हें कार्यान्वयन और निर्णय-संबंधी अधिकार प्रदान किए गए।

(v) औद्योगिकीकरण को बढ़ावा देने के लिए सीमित और निश्चित शर्तों पर विदेशी पूँजी निवेश की अनुमति दी गई।

(vi) राज्य ने जीवन एवं व्यक्तिगत संपत्ति की सुरक्षा के लिए राजकीय बीमा एजेंसियाँ स्थापित कीं।

(vii) विभिन्न स्तरों पर बैंक खोलकर बैंकिंग व्यवस्था का प्रसार किया गया।

(viii) कामगारों के लिए ट्रेड यूनियनों की अनिवार्य सदस्यता समाप्त कर दी गई। यद्यपि लेनिन ने अपनी नई आर्थिक नीति में साम्यवादी आदर्शों और सिद्धांतों से कुछ समझौता किया, जैसे—व्यक्तिगत संपत्ति की अवधारणा को स्वीकार करना, किसानों को भू-स्वामित्व देना, परंतु यह तत्कालीन परिस्थितियों की माँग थी। ऐसा उसने राष्ट्रहित में किया। स्वयं लेनिन ने अपनी नीति के आलोचकों को जवाब देते हुए कहा कि **तीन कदम आगे बढ़कर एक कदम पीछे हटना—फिर भी दो कदम आगे रहने के समान है।** लेनिन की आर्थिक नीति से सोवियत संघ की अर्थव्यवस्था में सुधार हुआ।

विदेश नीति

आंतरिक सुधारों के अतिरिक्त लेनिन ने बाह्य समस्याओं की ओर भी ध्यान दिया एवं महत्त्वपूर्ण निर्णय लिए।

गुप्त संधियों की समाप्ति—लेनिन ने जार अथवा केरेन्सकी सरकार द्वारा विदेशों के साथ की गई सभी संधियों को समाप्त कर दिया।

राष्ट्रीयता का सिद्धांत—लेनिन ने सोवियत संघ में राष्ट्रीयता का सिद्धांत लागू किया। इसके अनुसार, सोवियत संघ में रहनेवाली सभी पराधीन जातियों को स्वतंत्र कर उन्हें स्वायत्तता दी गई। फलस्वरूप, फिनलैंड, बेटेविया इत्यादि राज्यों ने अपनी स्वतंत्र सत्ता स्थापित की।

साम्राज्यवाद-विरोधी नीति—लेनिन साम्राज्यवाद का कट्टर विरोधी था। इसलिए, उसने वैसे सभी राष्ट्रों को सहायता का आश्वासन दिया जो विदेशी शासन के विरुद्ध संघर्षरत थे। इसके बावजूद उसने अन्य राष्ट्रों के साथ शांति एवं सहयोग की नीति अपनाई। 1921 में उसने इंगलैंड के साथ एक व्यापारिक संधि की। पूर्वी देशों—चीन, अफगानिस्तान—के साथ लेनिन ने सौहार्दपूर्ण संबंध बनाए।

कौमिन्टर्न (Comintern) की स्थापना—लेनिन का एक अन्य महत्त्वपूर्ण कार्य था 1919 में मास्को में **थर्ड इंटरनेशनल** (Third International) की स्थापना करना। मार्क्सवाद का प्रचार करने एवं विश्व के सभी मजदूरों को संगठित करने के उद्देश्य से विभिन्न देशों के साम्यवादी दलों के प्रतिनिधि मास्को में एकत्रित हुए। सभी देशों की साम्यवादी पार्टियों का एक संघ बनाया गया जो **कौमिन्टर्न** कहलाया। इसका मुख्य कार्य विश्व में क्रांति का प्रचार करना एवं साम्यवादियों की सहायता करना था। कौमिन्टर्न का नेतृत्व सोवियत संघ के साम्यवादी दल के पास रहा। लेनिन के इस कार्य से पूँजीवादी देशों में बेचैनी फैल गई। सोवियत संघ से मधुर संबंध बनाने को वे बाध्य हो गए। 1924 तक इटली, जर्मनी, इंगलैंड ने सोवियत संघ की बोल्शेविक सरकार को मान्यता प्रदान कर दी।

इस प्रकार, लेनिन ने सोवियत संघ का कायापलट कर दिया। सोवियत संघ अब प्रगति के मार्ग पर तेजी से आगे बढ़ा। द्वितीय विश्वयुद्ध की समाप्ति तक सोवियत संघ साम्यवादी गुट का नेता और विश्व की महान शक्ति बन गया, तथापि लेनिन की आलोचना इस बात के लिए की जाती है कि उसने अपनी नीतियों के कार्यान्वयन में असहिष्णुता की नीति अपनाई। साम्यवादी विचारधारा का विरोध करनेवालों अथवा पार्टी में गुटबाजी करनेवालों को कठोर दंड दिए गए। अनेकों को मार डाला गया, पार्टी से निकाल दिया गया, पार्टी की विचारधारा का समर्थन करने को विवश किया गया अथवा देश से निष्कासित कर दिया गया। इस प्रकार, उस सर्वाधिकारवादी शासन की प्रक्रिया आरंभ हुई जो उसके उत्तराधिकारी स्टालिन के समय में अधिक बलवती हुई।

बोल्शेविक क्रांति का महत्त्व एवं परिणाम

1917 की रूस की क्रांति आधुनिक विश्व इतिहास की एक महत्त्वपूर्ण घटना है। 1789 की फ्रांसीसी क्रांति मूल रूप से एक राजनीतिक क्रांति थी, परंतु 1917 की रूस की क्रांति एक ही साथ राजनीतिक, आर्थिक और सामाजिक क्रांति थी। फ्रांस की क्रांति **बुर्जुआ वर्ग** की क्रांति थी, परंतु रूस की क्रांति **सर्वहारा वर्ग** की क्रांति थी। इस क्रांति ने **सर्वहारा वर्ग** को सशक्त किया।

बोल्शेविकों ने सत्ता सँभालते ही व्यक्तिगत संपत्ति को समाप्त कर दिया। उद्योगों एवं बैंकों का राष्ट्रीयकरण किया गया। जमीन सामाजिक संपत्ति घोषित की गई। किसानों को छूट दी गई कि वे कुलकों की जमीन पर कब्जा कर लें। नगरों में बड़े मकानों का विभाजन कर दिया गया। परंपरागत कुलीन उपाधियाँ समाप्त कर दी गईं। सेना की नई वर्दी बनाई गई। इस प्रकार, रूस में नई व्यवस्था स्थापित हुई।

1917 की क्रांति के दूरगामी और व्यापक प्रभाव पड़े। इसका प्रभाव न सिर्फ सोवियत संघ पर, बल्कि विश्व के अन्य देशों पर भी पड़ा। इस क्रांति के अग्रलिखित प्रभाव (परिणाम) हुए—

बोल्शेविक क्रांति का महत्त्व एवं परिणाम

क्रांति का सोवियत संघ पर प्रभाव

- स्वेच्छाचारी जारशाही का अंत
- सर्वहारा वर्ग के अधिनायकवाद की स्थापना
- नई प्रशासनिक व्यवस्था की स्थापना
- नई सामाजिक-आर्थिक व्यवस्था
- धर्मनिरपेक्ष राज्य की स्थापना
- रूसीकरण की नीति का परित्याग

क्रांति का विश्व पर प्रभाव

- पूँजीवादी राष्ट्रों में आर्थिक सुधार के प्रयास
- सर्वहारा वर्ग के सम्मान में वृद्धि
- साम्यवादी सरकारों की स्थापना
- अंतरराष्ट्रवाद को प्रोत्साहन
- साम्राज्यवाद के पतन की प्रक्रिया तीव्र
- नया शक्ति-संतुलन

बोल्शेविक क्रांति का सोवियत संघ पर प्रभाव

स्वेच्छाचारी जारशाही का अंत—1917 की फरवरी क्रांति के परिणामस्वरूप अत्याचारी एवं निरंकुश राजतंत्र की समाप्ति हो गई। सदियों पुराना रोमोनोव वंश का शासन समाप्त हो गया। क्रांति के बाद रूस में जनतंत्र की स्थापना की गई। रूसी साम्राज्य के स्थान पर **सोवियत समाजवादी गणराज्य संघ** (Union of Soviet Socialist Republics—USSR) का गठन हुआ।

सर्वहारा वर्ग के अधिनायकवाद की स्थापना—बोल्शेविक क्रांति ने पहली बार शोषित सर्वहारा वर्ग को सत्ता और अधिकार प्रदान किया। नई व्यवस्था के अनुसार, भूमि पर कुलकों के अधिकार समाप्त कर दिए गए एवं भूमि का स्वामित्व किसानों को दिया गया। कल-कारखानों का राष्ट्रीयकरण किया गया। देश की सारी संपत्ति राष्ट्रीय संपत्ति घोषित की गई। उत्पादन के साधनों पर निजी स्वामित्व समाप्त कर दिया गया। उद्योगों का प्रबंधन मजदूरों के नियंत्रण में दे दिया गया। मजदूरों को मतदान का अधिकार दिया गया एवं उनकी सुरक्षा के लिए नियम बनाए गए। इस प्रकार, सोवियत संघ में सर्वहारा वर्ग को सबसे प्रमुख स्थान दिया गया।

नई प्रशासनिक व्यवस्था की स्थापना—क्रांति के बाद सोवियत संघ में एक नई प्रशासनिक व्यवस्था की स्थापना की गई। यह व्यवस्था साम्यवादी विचारधारा के अनुकूल थी। प्रशासन का मुख्य उद्देश्य कृषकों एवं मजदूरों के हितों की सुरक्षा करना एवं उनकी प्रगति के लिए कार्य करना था। सोवियत संघ में पहली बार साम्यवादी सरकार की स्थापना हुई। इससे साम्यवाद का तेजी से प्रचार हुआ।

नई सामाजिक-आर्थिक व्यवस्था—क्रांति के बाद सोवियत संघ में नई सामाजिक-आर्थिक व्यवस्था की स्थापना हुई। सामाजिक असमानता समाप्त कर दी गई। वर्गविहीन समाज का निर्माण कर समाज का परंपरागत स्वरूप बदल दिया गया। पूँजीपति और जमींदार वर्ग का उन्मूलन कर दिया गया। समाज में एक ही वर्ग रहा जो साम्यवादी नागरिकों का था। काम के अधिकार को संवैधानिक अधिकार बना दिया गया। व्यक्तिगत संपत्ति समाप्त कर पूँजीपतियों का वर्चस्व समाप्त कर दिया गया। देश की सारी संपत्ति का राष्ट्रीयकरण कर दिया गया। इस प्रकार, एक वर्गविहीन और शोषणमुक्त सामाजिक-आर्थिक व्यवस्था की स्थापना हुई।

धर्मनिरपेक्ष राज्य की स्थापना—क्रांति के पूर्व रूसियों को धार्मिक स्वतंत्रता नहीं थी। चर्च का इसपर नियंत्रण था। बोल्शेविक क्रांति ने इस व्यवस्था को भी बदल दिया। धार्मिक जीवन पर से चर्च का नियंत्रण समाप्त कर दिया गया। चर्च की सारी संपत्ति जब्त कर ली गई। राज्य ने किसी धर्म को प्रश्रय नहीं दिया, बल्कि सबों को अपनी व्यक्तिगत मान्यता के अनुरूप किसी भी धर्म को अपनाने की छूट दी। फलस्वरूप, सोवियत संघ में धर्मनिरपेक्ष राज्य की स्थापना हुई।

रूसीकरण की नीति का परित्याग—क्रांति के पूर्व ज़ार द्वारा अपनाई गई रूसीकरण की नीति से गैर-रूसियों में गहरा असंतोष व्याप्त था। अतः, नई सरकार ने पुराने रूसी साम्राज्य के अंतर्गत आनेवाले सभी राष्ट्रों को सोवियत गणराज्य का अभिन्न अंग बना लिया। इसके साथ ही सभी प्रजाति के लोगों को समानता का अधिकार दिया गया। फलतः, देश के भीतर असंतोष की भावना कमजोर पड़ गई।

बोल्शेविक क्रांति का विश्व पर प्रभाव

बोल्शेविक क्रांति का विश्व के दूसरे देशों पर भी प्रभाव पड़ा। ये प्रभाव निम्नलिखित थे—

पूँजीवादी राष्ट्रों में आर्थिक सुधार के प्रयास—विश्व के जिन देशों में पूँजीवादी अर्थव्यवस्था थी वे भी यह महसूस करने लगे कि बिना सामाजिक-आर्थिक समानता के राजनीतिक समानता अपर्याप्त है। अतः, इस दिशा में कुछ प्रयास किए गए। पूँजीवादी देशों ने भी परिवर्तित रूप में सोवियत संघ के आर्थिक मॉडल को अपना लिया। इससे पूँजीवाद का चरित्र भी परिवर्तित हो गया।

सर्वहारा वर्ग के सम्मान में वृद्धि—बोल्शेविक क्रांति के परिणामस्वरूप विश्व के अन्य देशों में भी किसानों-मजूदरों का सम्मान बढ़ा। पूँजीपतियों और मजदूरों में वर्गसंघर्ष बढ़ गया। प्रत्येक राष्ट्र की सरकार अपने लोगों को रोटी, कपड़ा, मकान, भूमि और शांति उपलब्ध कराना अपना मुख्य दायित्व समझने लगी।

साम्यवादी सरकारों की स्थापना—सोवियत संघ के समान ही विश्व के अन्य देशों—चीन, वियतनाम इत्यादि में भी बाद में साम्यवादी सरकारों की स्थापना हुई। साम्यवादी विचारधारा के प्रसार और प्रभाव को देखते हुए राष्ट्रसंघ ने भी मजदूरों की दशा में सुधार लाने के प्रयास किए। इस उद्देश्य से **अंतरराष्ट्रीय श्रम संगठन** (ILO) की स्थापना की गई। इसने मजदूरों को शोषण से मुक्ति दिलाने एवं उनके जीवन-स्तर को ऊँचा उठाने का प्रयास किया।

अंतरराष्ट्रवाद को प्रोत्साहन—समाजवादी विचारों के प्रसार से अंतरराष्ट्रवाद को प्रोत्साहन मिला। सिद्धांतरूप में ही सही, सभी राष्ट्रों ने ऐसा महसूस किया कि दूसरे राष्ट्रों के साथ उनके संबंध का आधार मात्र अपना-अपना स्वार्थ ही नहीं होना चाहिए। परिणामस्वरूप, अब अनेक राष्ट्रीय समस्याओं को अंतरराष्ट्रीय समस्या का रूप देकर उनका शांतिपूर्ण समाधान निकालने का प्रयास किया जाने लगा।

साम्राज्यवाद के पतन की प्रक्रिया तीव्र—बोल्शेविक क्रांति ने साम्राज्यवाद के पतन का मार्ग प्रशस्त कर दिया। समाजवादियों ने संपूर्ण विश्व में साम्राज्यवाद के विनाश के लिए अभियान तेज कर दिया। सोवियत संघ ने सभी राष्ट्रों में विदेशी शासन के विरुद्ध चलाए जा रहे स्वतंत्रता आंदोलन को अपना समर्थन दिया। एशिया और अफ्रीका के उपनिवेशों में स्वतंत्रता के लिए प्रयास तेज कर दिए गए। सोवियत संघ की साम्यवादी सरकार ने स्वतंत्रता आंदोलनों एवं उपनिवेश-मुक्ति को नैतिक समर्थन प्रदान किया।

नया शक्ति-संतुलन—नवनिर्माण के बाद सोवियत संघ साम्यवादी राष्ट्रों का अगुआ बन गया। दूसरी ओर, अमेरिका पूँजीवादी राष्ट्रों का नेता बन गया। इससे विश्व दो शक्ति-खंडों साम्यवादी एवं

पूँजीवादी में विभक्त हो गया। दोनों अपनी-अपनी विचारधारा का प्रसार करने लगे। यूरोप भी वैचारिक आधार पर दो भागों में विभक्त हो गया—पूर्वी एवं पश्चिमी यूरोप। **धर्मसुधार आंदोलन के पश्चात और साम्यवादी क्रांति से पहले यूरोप में वैचारिक आधार पर इस तरह का वैचारिक विभाजन नहीं देखा गया था।** इसने आगे चलकर द्वितीय विश्वयुद्ध के पश्चात दोनों खेमों में सशस्त्रीकरण की होड़ एवं **शीत युद्ध** (Cold War) को जन्म दिया।

लेनिन के बाद सोवियत संघ

जॉसेफ स्टालिन के अधीन सोवियत संघ—लेनिन की मृत्यु के बाद भी सोवियत संघ प्रगति के मार्ग पर अग्रसर होता रहा। आर्थिक विकास के लिए सतत प्रयास किए गए। लेनिन के बाद सत्ता स्टालिन (1879–1953) के हाथों में आई। स्टालिन का अर्थ है **स्टील का आदमी** (man of steel)यानी **फौलादी पुरुष।** स्टालिन के समय अनेक आर्थिक एवं अन्य समस्याएँ विद्यमान थीं। अतः, सुनियोजित आर्थिक विकास के लिए 1928 में प्रथम पंचवर्षीय योजना लागू की गई। तीन पंचवर्षीय योजनाओं से औद्योगिक उत्पादन में वृद्धि हुई और अर्थव्यवस्था में सुधार आया। तेल, कोयला और स्टील उद्योग में बढ़ोतरी हुई। अनेक औद्योगिक नगर अस्तित्व में आए। कृषि का आधुनिकीकरण हुआ। साथ ही, वैज्ञानिक प्रगति भी हुई। सरकार ने श्रमिकों की स्थिति में सुधार लाने के लिए भी कुछ प्रयास किए। श्रमिकों और किसानों की शिक्षा के लिए स्कूलों की व्यवस्था की गई। यह व्यवस्था भी की गई कि वे विश्वविद्यालयों में प्रवेश पा सकें। कामकाजी महिला श्रमिकों के बच्चों की देखभाल की व्यवस्था की गई। श्रमिकों के लिए आवास एवं चिकित्सा की सुविधा भी उपलब्ध कराई गई।

सामूहिक कृषि की विफलता—इसके बावजूद नियोजित अर्थव्यवस्था के आरंभिक चरण में सामूहिक कृषि का प्रयोग सफल नहीं हो सका। अतः, स्टालिन ने राज्य-नियंत्रित कृषि फार्म स्थापित करने की योजना बनाई। इनका आधुनिक रूप से विकास किया जाना था। 1929 से किसानों को सामूहिक कृषि फार्म **(कोलखोज)** में खेती करने को बाध्य किया गया। इससे होनेवाली आय को किसानों में वितरण करने की व्यवस्था की गई। अनेक किसानों ने इस नई व्यवस्था का विरोध किया, परंतु स्टालिन की सरकार ने ऐसे लोगों के विरुद्ध कड़ी नीति अपनाई। अनेकों को देश से निर्वासित कर दिया गया। स्टालिन की नियोजित अर्थव्यवस्था और सामूहिक कृषि की नीति की आलोचना पार्टी के अंदर कुछ लोगों ने की। इन्हें समाजवाद के विरुद्ध षड्यंत्रकारी मानकर कठोर दंड दिया गया। स्टालिन के विरोधी नेताओं को समाप्त कर दिया गया। ट्रॉटस्की को सोवियत संघ छोड़ना पड़ा। लोकतंत्र, भाषण और प्रेस पर प्रतिबंध लगा दिया गया। कला और साहित्य के विकास पर इसका प्रतिकूल प्रभाव पड़ा। स्टालिन ने सर्वाधिकारवाद की जो नीति अपनाई उसमें मार्क्सवाद और क्रांति के आदर्शों की घोर उपेक्षा की गई। स्टालिन वस्तुतः एक तानाशाह बन गया यद्यपि उसने सोवियत संघ को एक महान शक्ति बना दिया। सोवियत संघ साम्यवादी गुट का अगुआ बन गया। स्टालिन के प्रयासों से सोवियत संघ एक शक्तिशाली देश के रूप में विश्व मानचित्र पर सामने आया। कृषि, उद्योग एवं विज्ञान का विकास हुआ। सोवियत संघ की गणना ब्रिटेन और अमेरिका जैसे शक्तिशाली देशों में होने लगी। युद्ध सम्मेलनों में अमेरिकी राष्ट्रपति रूजवेल्ट और ब्रिटिश प्रधानमंत्री चर्चिल के साथ स्टालिन भी भाग लेने लगा। इससे सोवियत संघ की शक्ति और प्रतिष्ठा में वृद्धि हुई। इस प्रकार, स्टालिन ने कठोर नीति का अनुसरण कर सोवियत संघ में सर्वाधिकारवाद की स्थापना की।

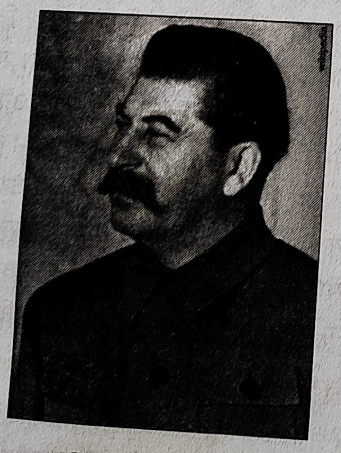

चित्र 2.6 स्टालिन

साम्यवादी व्यवस्था का प्रभाव—बोल्शेविकों द्वारा जिस प्रकार सत्ता ग्रहण की गई और इसे बनाए रखा गया उसे यूरोप के अनेक समाजवादियों ने स्वीकार नहीं किया, तथापि पहली बार श्रमिक राज्य की स्थापना का प्रभाव विश्व के अनेक भागों पर पड़ा। अनेक देशों में कम्युनिस्ट पार्टी की स्थापना की गई। ताशकंद में 1920 में हिंदुस्तान की कम्युनिस्ट पार्टी की स्थापना हुई। इसके सदस्य सोवियत संघ से संपर्क बनाए हुए थे। जवाहरलाल नेहरू, रवींद्रनाथ टैगोर और अन्य अनेक भारतीयों ने सोवियत समाजवाद पर लेख और पुस्तकें लिखीं। औपनिवेशिक राज्यों पर रूसी क्रांति का गहरा प्रभाव पड़ा। द्वितीय विश्वयुद्ध तक सोवियत संघ ने समाजवाद को विश्वव्यापी आदर्श बना दिया। 20वीं शताब्दी के उत्तरार्द्ध से सोवियत साम्यवाद की आलोचना होने लगी। यद्यपि साम्यवादी व्यवस्था में सोवियत संघ ने अप्रत्याशित प्रगति की, परंतु इसने नागरिक अधिकारों का हनन किया और सत्ता में बने रहने के लिए दमनात्मक नीति अपनाई। फलस्वरूप, सोवियत संघ का ही विघटन हो गया।

सोवियत संघ का विघटन—स्टालिन का सर्वाधिकारवाद मार्च 1953 तक बना रहा। इसी वर्ष उसकी मृत्यु हुई। इसके बाद निकिता ख्रुश्चेव 1964 तक सत्ता में बने रहे। उन्होंने स्टालिनीकरण की नीति को त्यागकर उदारवादी नीति बनाई। उनके उत्तराधिकारी लिओनिड ब्रेझनेव ने पुनः स्टालिन की नीतियों का अनुसरण

किया जिसकी प्रतिक्रिया होनी आरंभ हो गई। 1985 में मिखाइल गोर्बाचेव पार्टी के महासचिव चुने गए। ख्रुश्चेव के समान वे भी उदारवादी थे। उन्होंने ग्लासनोस्त (खुलापन) और पेरेस्त्रोइका (पुनर्रचना) की नीतियाँ अपनाईं। उनकी इन नीतियों ने सोवियत संघ के लिए अनेक समस्याएँ उत्पन्न कर दीं। सोवियत संघ में सत्ता-संघर्ष आरंभ हो गया, गणराज्यों में स्वतंत्रता संग्राम आरंभ हो गए। वे एक-एक कर स्वतंत्र होने लगे। गोर्बाचेव को पार्टी के महासचिव के पद से हटाकर बोरिस येल्तसिन ने सत्ता पर अधिकार कर लिया और रूस की स्वतंत्रता की घोषणा कर दी। फलतः, दिसंबर 1991 में सोवियत संघ का विघटन हो गया।

स्मरणीय

- समाजवाद का उद्देश्य सामाजिक-आर्थिक समानता की स्थापना का प्रयास—18वीं—19वीं शताब्दियों में समाजवादी विचारधारा का प्रसार—महत्त्वपूर्ण समाजवादी चिंतक रॉबर्ट ओवेन, सेंट साइमन, चार्ल्स फूरिए—कार्ल मार्क्स और एंगेल्स ने साम्यवादी दर्शन दिया—दोनों ने कम्युनिस्ट मैनिफेस्टो प्रकाशित किया—मार्क्स ने दास कैपिटल लिखा—उन्होंने इतिहास की भौतिकवादी व्याख्या की—उनके अनुसार इतिहास वर्गसंघर्ष का इतिहास—ऐतिहासिक प्रक्रिया के अंत में वर्गविहीन समाज की स्थापना—राज्य विलुप्त हो जाएगा।
- रूस में दो क्रांतियाँ हुईं—(i) 1905 में; इससे जारशाही का अंत नहीं हुआ। (ii) 1917 में दो क्रांतियाँ हुईं—(क) फरवरी क्रांति—इसके परिणामस्वरूप जारशाही का अंत हुआ। (ख) अक्टूबर क्रांति अथवा बोल्शेविक क्रांति—इसके परिणामस्वरूप सत्ता बोल्शेविकों के हाथों में आई।
- 1917 की बोल्शेविक क्रांति (अक्टूबर क्रांति) के कारण—राजनीतिक कारण—(i) निरंकुश एवं अत्याचारी शासन (ii) रूसीकरण की नीति (iii) राजनीतिक दलों का उदय (iv) नागरिक एवं राजनीतिक स्वतंत्रता का अभाव (v) रूस की राजनीतिक प्रतिष्ठा में कमी (vi) 1905 की क्रांति का प्रभाव (vii) प्रथम विश्वयुद्ध में रूस की पराजय (viii) जार निकोलस द्वितीय और जारीना की भूमिका; सामाजिक कारण—(i) किसानों की स्थिति (ii) किसानों का विद्रोह (iii) मजदूरों की स्थिति (iv) सुधार आंदोलन; आर्थिक कारण—(i) दुर्बल आर्थिक स्थिति (ii) औद्योगिकीकरण की समस्या; धार्मिक कारण—धार्मिक स्वतंत्रता की कमी; बौद्धिक कारण—रूस में बौद्धिक जागरण
- लेनिन और रूस का नवनिर्माण—लेनिन का जन्म 22 अप्रैल 1870 को—मृत्यु 21 जनवरी 1924 में
- लेनिन के कार्य—आंतरिक व्यवस्था—(i) युद्ध की समाप्ति (ii) प्रतिक्रांति का दमन (iii) आर्थिक व्यवस्था (iv) सामाजिक सुधार (v) प्रशासनिक सुधार (vi) नए संविधान का निर्माण
- नई आर्थिक नीति—सोवियत संघ की अर्थव्यवस्था में सुधार के लिए 1921 में इसे लागू किया गया। इससे सोवियत संघ की अर्थव्यवस्था में सुधार हुआ।
- लेनिन की विदेश नीति—(i) गुप्त संधियों की समाप्ति (ii) राष्ट्रीयता का सिद्धांत (iii) साम्राज्यवाद-विरोधी नीति (iv) कौमिन्टर्न की स्थापना
- बोल्शेविक क्रांति का महत्त्व—विश्व की प्रथम सर्वहारा वर्ग की क्रांति—प्रथम साम्यवादी सरकार की स्थापना
- क्रांति के परिणाम—सोवियत संघ पर प्रभाव—(i) स्वेच्छाचारी जारशाही का अंत (ii) सर्वहारा वर्ग के अधिनायकवाद की स्थापना (iii) नई प्रशासनिक व्यवस्था की स्थापना (iv) नई सामाजिक-आर्थिक व्यवस्था (v) धर्मनिरपेक्ष राज्य की स्थापना (vi) रूसीकरण की नीति का परित्याग
- क्रांति का विश्व पर प्रभाव—(i) पूँजीवादी राष्ट्रों में आर्थिक सुधार के प्रयास (ii) सर्वहारा वर्ग के सम्मान में वृद्धि (iii) साम्यवादी सरकारों की स्थापना (iv) अंतरराष्ट्रवाद को प्रोत्साहन (v) साम्राज्यवाद के पतन की प्रक्रिया तीव्र (vi) नया शक्ति-संतुलन
- लेनिन के बाद सोवियत संघ—स्टालिन ने सोवियत संघ की आर्थिक प्रगति के लिए प्रयास किए, साथ ही उसने सर्वाधिकारवाद की स्थापना भी की।
- ख्रुश्चेव और गोर्बाचेव की नीतियाँ—गोर्बाचेव के ग्लासनोस्त और पेरेस्त्रोइका की नीतियों का सोवियत संघ पर प्रतिकूल प्रभाव—दिसंबर 1991 में सोवियत संघ का विघटन

अभ्यासार्थ प्रश्न